Welcome Remarks by Ambassador Anurag Bhushan
Visit of Swami Vigyananand
24 August 2025
Stockholm

आदरणीय स्वामी विज्ञानानंद जी एवं सभी उपस्थित गणमान्य अतिथि गण, नमस्कार

सबसे पहले मैं स्वामी विज्ञानानंद जी को प्रणाम करता हूँ और मेरे घर एवं स्टॉकहोम में उनका स्वागत करता हूँ।

स्वामी जी ने अपने जीवन को धर्म, संस्कृति और मानवता की सेवा के लिए समर्पित किया है। आज यहाँ हम सभी उनकी उपस्थिति तथा सानिध्य को पाकर अति प्रसंन्न हैं और उनके विचारों को सुनने के लिए उत्सुक हैं।

भारतीय प्रवासी समाज आज विश्व के हर कोने में बसा हुआ है। चाहे हम कहीं भी रहें, हमारी पहचान हमारी संस्कृति, हमारी जड़ें और हमारे मूल्य ही हैं। हमें गर्व है कि हम उस परंपरा के वाहक हैं, जिसकी नींव सत्य, अहिंसा, करुणा और सेवा में रखी गई है।

हिंदू धर्म कोई केवल आस्था नहीं, बल्कि एक जीवन-पद्धति है। यह हमें सिखाता है कि–

- *"वसुधैव कुटुम्बकम्"* अर्थात सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है।
- *"सत्यं वद, धर्मं चर"* अर्थात सत्य बोलो और धर्म का पालन करो।
- प्रकृति, समाज और आत्मा के बीच संतुलन बनाकर ही जीवन सार्थक होता है।

योग और आयुर्वेद हमारी संस्कृति की नीव रहे हैं, जिसको आज विश्व भर में मान्यता मिल रही है।

हमारे त्योहार, हमारी पूजा-पद्धति और हमारे संस्कार–ये सभी एक वैज्ञानिक तर्क से उत्पन्न हुए हैं। ये हमें जीवन के प्रत्येक क्षण में कृतज्ञता, आनंद और सामंजस्य का अनुभव कराते हैं। यही हमारी शक्ति है और यही हमारी पहचान।

अंत में, मैं अधिक समय ना लेते हुए स्वामी विज्ञानानंद जी से उनके मार्ग दर्शन के लिए अनुरोध करूँगा

धन्यवाद।